गाँव की सांस्कृतिक विरासत : कल आज और कल

डॉ. ज्योति सिंह
सहायक प्राध्यापिका
वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय सूरत

सारांश

'गाँव की सांस्कृतिक विरासत : कल आज और कल' नामक शोधालेख में गाँव के उन सांस्कृतिक विरासत पर प्रकाश डाला गया है जो प्राचीन कालीन गाँव की रमणीय शोभा होती थी और वे आज भी हमारे स्मृति पटल पर अमिट छाप छोड़ी हुई है। इसके साथ ही कुछेक गाँव के उजड़े चमन की बात करते हुए आदर्श स्थिति को रेखांकित किया गया है।

भूमिका

गाँव या ग्राम शब्द के प्रयोग मात्र से ही प्रकृति का एक मनोरम दृश्य हमारे मन मस्तिष्क के समक्ष आ जाता है। उस दृश्य में चहुँ ओर हरियाली ही हरियाली होती है। प्रातः काल नीम, बरगद, पीपल, पाकड़, जामुन, आम , बाँस इत्यादि के पत्तों से ओसों की बूँदे झरती रहती है। मध्याह्न काल में रुनझुन - रुनझुन पवन के झोंके पसीने से तरबतर शरीर पर आनन्द की अनुभूति कराते हैं। गर्मी के मौसम में आम, जामुन, नीम कौड़ी इत्यादि फल पेड़ के नीचे टपकते रहते हैं और उन्हें लूटने में बाल समूहों को स्वर्गानुभूति होती है। इसके साथ ही वृक्ष के नीचे खटिया पर बैठे बड़े बुजुर्गों को चौपाल लगाने में अति आनन्द की अनुभूति होती है। उधर दूसरी ओर माताएँ व बहनें घर के आँगन में नीम,आम व अमरूद के पेड़ के नीचे तथा तुलसी की क्याँरी के पास बैठकर सिलाई कढ़ाई करती हैं। इस बैठकी से उन्हें घर, परिवार, समाज तथा देश - दुनियाँ का हाल-चाल मिलता रहता है। कौआ, कोयल, गिलहरी, गौरैया, बया इत्यादि पंक्षियों के मधुर संगीत से मन झूम उठता है। द्वार पर बँधे गो वंश के गले की घंटी से सम्पन्नता का भाव बोध होता है और जब वे माँ - माँ करके भोजन के लिए संकेत करते हैं तो कितना अच्छा लगता है। थोड़ा और आगे देखें तो प्रत्येक घराने में अपनी-अपनी पोखरी होती है, ग्राम समाज का पोखरा भी होता है। पोखरी में मछली , केकड़ा, सर्प, मगर, मेढ़क, शैवाल,जल कुम्भी, सिंघाड़ा (पानी फल) इत्यादि की शोभा देखते ही बनती है। ग्राम समाज का पोखरा युवाओं के लिए कुश्ती का अखाड़ा तथा खेल के मैदान के रूप में उपलब्ध होता था। इसके साथ ही ग्राम देवता व देवियों के पूजा स्थल के रूप में भी होता था।

थोड़ा खेत की ओर बढ़े तो रवि और खरीब की फसलों से बाड़े शोभायमान होते हैं। कुछ के खेत में सिंचाई के लिए ट्यूबेल और कहीं नहर की व्यवस्था रहती है। इसके साथ ही चौराहे पर नुक्कड़ बाजार के साथ आराधना व उपासना स्थल भी होता है। मंदिर की घण्टी तथा प्रातः कालीन व सांयकालीन आरती के झाल - मंजीरा व शंख - नाद् की ध्वनि से गाँवों की दिनचर्या चलती है। मंदिर व मठों में विद्यार्थियों के लिए विद्या अर्जित करने की व्यवस्था रहती है।

इस प्रकार के हमारे प्राचीनकाल के गाँव हुआ करते थे, अभी भी कहीं-कहीं देखने को मिल जाते हैं , लेकिन वर्तमान समय में पूर्ण रूप से यह व्यवस्था अभी नहीं है। वर्तमान के कुछ गाँव अत्याधुनिकता के रंग में रंग गए हैं और गाँव की सोंधी खुशबू व मनोरम दृश्य विलुप्त हो गए हैं। यही कारण है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की ओर से गाँवों की गरिमा को बनाएँ रखने के लिए आदर्श ग्रामीण विकास की व्यवस्था करनी पड़ी। आदर्श ग्रामीण व्यवस्था के मानक के रूप में कुछ प्रावधान किए गए हैं। उन गाँवों को ही आदर्श गाँव कहा जा सकता है जिसमें उपर्युक्त व्याख्यायित गाँव का मूल गुण -धर्म हो, लेकिन इसके साथ ही नगर की सुख सुविधा भी उपलब्ध रहे; उदाहरणार्थ शिक्षा - दीक्षा के लिए प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा की व्यवस्था हो, स्वास्थ्य लाभ के लिए चिकित्सा संबंधी सुविधा हो, अत्याधुनिक बाजार की व्यवस्था हो, घूमने-फिरने व बच्चों के खेलने-कूदने के लिए उपवन वाटिका व खेल का मैदान हो, सबसे बड़ी बात रोजगार जन्य गतिविधि हो इत्यादि।

लगभग अट्ठारहवीं शताब्दी से पूर्व ही गुजरात के अधिकांशतः प्रत्येक घर से एक या दो सदस्य विदेश में रोजगार करते आये हैं। लेकिन वे लोग अपने जड़ो से कटे नहीं। अपनी मातृभूमि तथा संयुक्त परिवार से जुड़ाव होने के कारण वे अपने राष्ट्र व प्रदेश में विदेशी मुद्रा के भण्डारण की दिन दुनी रात चौगुनी वृद्धि करते रहे। कहने के लिए कोई एक परिवार का बन्दा है और अपने परिवार की सुख सुविधा बढ़ा रहा है लेकिन परोक्ष रूप से वह अपने समाज के अन्य व्यक्तियों को भी सुविधा प्रदान कर रहा है। यही कारण है कि गुजरात में अधिकाधिक हाईटेक गाँव अथवा प्रवासी भारतीयों का गाँव देखने को मिल जाता है। कुछ

एक महाराष्ट्र तथा अन्य प्रदेशों में भी है ; उदाहरणस्वरूप : गुजरात में आनन्द का धर्मज तथा बारडोली का बाबेन , ऐना , वनेसा , रायम, आफवा , इसरोली , मोता , वराड , विहान , साम्पुरा , टिम्बा , ओरणा , दिगस , खोज , कंटाली , बामइया , रामपरा , खरवासा , महेषाणा का वेडसी , केवडिया तथा अन्य गाँव , माँडवी के कुछ एक गाँव , महाराष्ट्र में सम्भाजी नगर (अहमद नगर) का हिवरे बजरे ,उत्तरप्रदेश में जयापुर इत्यादि।

क्रमशः धर्मज व बारडोली के बाबेन को गुजरात व भारतवर्ष का पेरिस कहा जाता है। इन दोनों गाँवों में शहरी सुविधा होते हुए भी उनमें गाँवों की शोभा है, मिट्टी की सुगंध है, चिड़ियों की चहचहक , झीलों की शान्ति है। यहाँ ऊँचा क्लाक टॉवर ,चौदह समृद्ध बैंक , प्रथम श्रेणी के पर्यटन की व्यवस्था , ग्राम पंचायत का एक करोड़ से अधिक का एफ. डी., पर्यावरण से मित्रवत व्यवहार करते हुए कृषि के विकास पर बल देना , बंजर जमीन को तालाब बनाना , पशु चारागाह बनाना , नहर से खेतों में सिंचाई करने की व्यवस्था , गन्ने की कटाई के बाद सुगर फैक्ट्री में भेजने की व्यवस्था , पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए डेयरी की व्यवस्था करना , कई प्रकार की मल्टीनेशनल कम्पनियों की व्यवस्था साधारण लोगों को रोजगार पाने का आश्वासन दिलाता है। प्राथमिक विद्यालय,माध्यमिक विद्यालय , 'मैनेजमेंट' महाविद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय की व्यवस्था बालक - बालिकाओं के भविष्य को सुरक्षित करता है। यही नहीं यहाँ का श्मशानघाट भी हाईटेक है। जिसे देखने के लिए लोग दूर - दूर से आते हैं।

इन हाईटेक गाँवों की बात इसलिए की जा रही है, क्योंकि गाँवों से पलायन रोकना, किसानी को श्रेष्ठतम की श्रेणी में लाना है ,गाँवों के विकास का इवेन्ट मैनेजमेंट स्थापित करना, उद्योगपतियों को गाँवों की ओर उन्मुख करना , परम्परागत खेती को विश्वस्तरीय बनाना, पर्यटन को बढ़ावा देना इत्यादि कार्यों को यहाँ प्रमुखता से किया जाता है। इससे यहाँ बेरोजगारी का रोना लगभग समाप्त हो गया है और जिस राम राज्य का सपना हमारे कई पुरखे देख गये और आने वाली न जाने कितनी पीढ़ियाँ देखेगीं , उसे साकार करने का प्रथम सोपान यही है।

उपर्युक्त बिन्दुओं पर थोड़ा विस्तार से चर्चा कर लेना चाहिए, जिससे अपनी दृष्टि पाठकों के समक्ष रखी जा सके।

* निरन्तर शहरों में बढ़ती भीड़ और अपराध को नियंत्रित करने के लिए गाँवों से पलायन को रोकना ही होगा। अभी अधिकांशतः गाँव उजाड़ ग्राम बने हुए हैं , वहाँ के परिवार के युवा सदस्य प्रवासी मजदूर , मिस्त्री , ठेला वाला , सब्जी वाला , रिक्शा वाला के रुप में दिन - रात एक कर रहे हैं। फिर भी सम्माननीय स्थान प्राप्त नहीं होता। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि वे सभी अपनी जड़ों से उखड़ चुके हैं। उन्हें अपने गॉवों में ही रोजगार मिलेगा तो वे परिवार के वृद्ध माता - पिता जी को लाठी का सहारा दे सकेगें और बच्चों को दादा - दादी के जीवनानुभव का लाभ और आशीर्वाद मिलेगा। इस प्रकार हम समाज की छोटी इकाई, परिवार को संस्कारयुक्त बनाकर राष्ट्र निर्माण में सहभागी बन सकते हैं।

अतःअब गाँवों को शहरी सुख - सुविधा सम्पन्न, परन्तु परम्परागत गाँवों के स्वरुप में ही ढ़ालना होगा। यही विचार बाबेन गाँव के प्रमुख का है। यहाँ के प्रधान व सरपंच लोगों को सुख - सुविधा प्रदान करते हैं, तभी तो यहाँ पर सुगर , सीमेंट, कपड़े इत्यादि का कारखाना, सी . बी .एस. एसी . तथा गुजरात बोर्ड का वशिष्ठ जेनसस विद्यालय ,विद्या भारती ट्रस्ट द्वारा विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय की शाखा, टेक्सास अस्पताल, शॉपिंग मॉल ट्रेंडस, मेट्रो, पैंटालून, मैक्डोनाल्ड्स इत्यादि की शाखाएँ, मनोरंजन के लिए सिनेमा घर, विकेन्ड मनाने के लिए पी एस पिज्जा सेन्टर, वेसिलस फैमिली रेस्ट्रोरेंट , संकल्प रेस्ट्रोरेंट , लेकभ्यू प्वाइन्ट रेस्ट्रोरेंट इत्यादि ग्राणीम बैंक, सहकारी बैंक (को-ऑपरेटिव बैंक), आई सी आई बैंक , बैंक ऑफ बड़ौदा इत्यादि की शाखाएँ, इसके साथ ही पूजा-अर्चना के लिए मंदिर , दरगाह, मस्जिद, चर्च इत्यादि की भी व्यवस्था है। विद्यार्थियों के लिए छात्रालय व पी.जी भी उपलब्ध है । रोजगार के लिए बाहरी क्षेत्र से आने वाले परिवार के लिए अच्छी, साफ - सुथरी तथा सभी सुविधाओं से सुसज्जित व सस्ती सोसाइटी भी उपलब्ध है। इसलिए वेसु, सूरत इत्यादि 'मेट्रो लाइफ'

को छोड़कर बाबेन बैंगलो, शुकन, लक्जरिया, लाइफ स्टाइल, प्लेटेनियम, लेक सिटी, लेक पैलेस, लेकभ्यू प्वाइंट सोसाइटी इत्यादि में आवास व निवास की व्यवस्था कर रहे हैं ।

* अँग्रेजी व्यवस्था स्थापित होने से पूर्व तक किसानी करना गौरव का विषय समझा जाता था। इसे संत कवि घाघ के निम्नलिखित दोहो से समझा जा सकता है --

"उत्तम खेती , मध्यम बान , निकृष्ट चाकरी भीख निदान ।1

खेती करै बनिज को धावै, ऐसा डूबै थाह न पावै।2।

उत्तम खेती जो हर गहा, मध्यम खेती जो सँग रहा।3।...

गोबर राखी पाती सड़ै , फिर खेती में दाना पड़ै।6।सन के डंठल खेत छिटावै, तिनते लाभ चौगुनो पावै।7।गोबर, मैला नीम की खली, या से खेती दुनी फली।8।"

इस प्रकार कृषि वैज्ञानिकों की तरह अनेकों सूत्र घाघ की तरफ से दिया गया है, जिससे किसान कम खर्च में 'ऑर्गेनिक' खेती कर सके। उस समय एक किसान अपने खेतों में अपनी आवश्यकता की प्रत्येक वस्तुओं को उगा लेता था , परन्तु जब से शिक्षा में क्लर्क की और व्यापार में अधिक मुनाफे की व्यवस्था हुई , तब से किसानी की तरफ से लोगों का मन हटता गया। सरकारी योजनाएँ किसानों के लिए न होकर मनरेगा में मजदूरों के लिए बनाया जाता रहा। यही कारण है कृषि प्रधान देश, भारतवर्ष सिर्फ कागजों में ही रह गया है , अब तो दाल , बॉस न जाने और क्या -क्या बाहरी देशों से आयात करना पड़ता है।

अतः अब किसानी में युवाओं की रुचि बढ़ानी होगी। कृषि वैज्ञानिकों को प्रयोगशाला से निकालकर मीडिया तंत्र के माध्यम से सामान्य लोगों के बीच प्रचारित - प्रसारित करना होगा।

अतः गुजरात सरकार नवसारी ,सूरत, बारडोली इत्यादि में कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की है। बाबेन में भी अपनी सब्जी मंडी है और इसमें अपने खेत से उगाएँ सब्जी बेचने के लिए किसान आते हैं । यहाँ आज भी बैल गाड़ी से गन्ना की ढ़ोवाई होती है। गीर गाय की गोशाला भी है । इससे न सिर्फ दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति स्थापित है अपितु पंचगव्य घी , धूप, मोबाइल चीप, तोरण, सजावट के सामान इत्यादि का सहकार मण्डली चलती है । व्यापार करने के लिए ट्रेन की सुविधा भी उपलब्ध है।

* हमारा किसान तभी सुदृढ़ हो सकता है जब वह परम्परागत खेती के साथ निर्यात करने की दृष्टि से ऐसे कुछ अन्न या अन्य पदार्थ जैसे बाँस , कुकुरमुत्ता, कपास , फूल , मसाला , नीम कौड़ी, केला, अमरूद या सब्जी , मछली पालन , डेयरी की व्यवस्था करेगा। जैसा कि गुजरात के किसान करते हैं। सहकारिता के भाव से यहाँ उपर्युक्त खेती होती है। स्थानीय सरकार की तरफ से खेती करने की सभी सुविधाएं है वह चाहे बीज भंडारण का हो , खाद की व्यवस्था हो या नहरों के द्वारा सिंचाई की व्यवस्था हो या फिर स्टोरेज व बाजार की सुविधा हो -- सभी उन्हें इसी बाबेन गाँव में उपलब्ध करवाया जाता है, तभी यहाँ के किसानों को आत्म - हत्या करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। यही व्यवस्था अन्य लोगों को भी देनी चाहिए। बारडोली किसान सत्याग्रहियों की प्रेरणा यहाँ विद्यमान है । तभी तो बाबेन गाँव के प्रवेश द्वार पर दो बैलों के जोड़े के साथ समृद्ध किसान हल जोजता हुआ प्रतीक चिह्न के साथ खड़ा है।

* इस प्रकार के आदर्श ग्राम को विकसित करने के लिए ग्राम पंचायत , राज्य सरकार तथा केन्द्र सरकार को ' ' 'इवेन्ट मैनेजमेंट 'के स्वरुप को बढ़ावा देना होगा।

जिस प्रकार आज कल जन्म- दिवस , सगाई के कार्यक्रम , विवाह महोत्सव इत्यादि कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए 'इवेन्ट मैनेजमेंट' को आयातित किया जाता है , ठीक उसी प्रकार गाँवों की आधारभूत आवश्यकताओं की आपूर्ति हेतु इस प्रकार की व्यवस्था विकसित करनी होगी। इससे कम समय में अधिक सकारात्मक परिणाम मिल सकता है और गाँव वालों को रोजगार भी मिल सकता है। इसका साक्षात् उदाहरण अभी हाल में ही अम्बानी परिवार ने अपने छोटे पुत्र के विवाहोत्सव को गाँव में करके रखा। ऐसा ही गुजरात के अन्य गाँवों की तरह बाबेन गाम में भी किया जाता है। प्रवासी भारतीयों के साथ ग्राम प्रधान तथा सरपंच उन उद्यमियों से ही पर्यावरण को शुद्ध व स्वच्छ रखने के लिए तालाब, झील, स्वीमिंग पूल , बच्चों के खेल के लिए व फूल उद्यान इत्यादि का निर्माण करवाते हैं। उदाहरण स्वरुप यहाँ पर जितने भी सोसाइटी बिल्डरों के द्वारा बनाया गया है उन्हें सार्वजनिक रूप से

खेल का मैदान, उपवन वाटिका बनाना पड़ा है और ऐसा वे स्वानुभूति से किए हैं ऐसा नहीं है, उन्हें तो पंचायत शासन- प्रशासन से निर्देश दिया गया है कि आप हमारी कृषि की भूमि ले रहे हो जिससे पर्यावरण का क्षरण हो रहा है, अतः उसकी कुछ हद तक आपूर्ति करने के लिए आपको पेड़ पौधे, तालाब, उपवन , खेल का मैदान इत्यादि बनाना ही होगा। यही कारण है कि लेक सिटी व लेक पैलेस के सामने बहुत ही सुन्दर झील है । इसके मध्य में सरदार वल्लभ भाई पटेल खड़े होकर मार्गदर्शन करते हुए प्रतीत होते हैं । बत्तक और मछली दाना खाने के लिए किनारे पर आकर पर्यटकों का मन मोह लेते हैं । एक तरफ स्वामी विवेकानन्द जी भारत माता के चरणों में समर्पित भाव से खड़े हैं। यहाँ पर मांगलिक कार्य होते ही रहते हैं । इसके बावजूद यहाँ पर गंदगी नहीं होती है। स्वच्छता पर विशेष ध्यान रहता है।

अतः कहा जा सकता है कि यदि कुछ अच्छा करने की ललक हो तो बिना एक दमड़ी खर्च किए सभी को सुविधा प्रदान किया जा सकता है।

* ग्राम पंचायत भवन को डिजिटल बनाकर गॉवों के सभी ग्रामीणों को ' ऑन लाइन' से सहजता से जोड़ दिया गया है। बिजली बिल हो या फिर सम्पत्ति कर (जिसे यहाँ घर वेरा कहा जाता है) हो या स्वच्छता का शुल्क हो सभी की आपूर्ति एक क्लिक से हो जाती है। इसके साथ ही जितने भी लोग खाने - पीने की दुकान लगाते हैं उन्हें भी स्वच्छता बनाए रखने के लिए न्यूनतम शुल्क देना पड़ता है ।

अतः कहा जा सकता है कि किसी भी कार्य को सम्पादित करने में लक्ष्मी आड़े नहीं आती हैं।

* इसी प्रकार यहाँ सामुदायिक भवन का निर्माण भी किया गया है , जिसमें कम खर्च करके बड़े से बड़े आयोजन को सहजता से सम्पन्न किया जाता है। यहाँ पर सामूहिक विवाह भी करवाया जाता है। गरीब से गरीब व्यक्ति भी अपने बच्चों का विवाह धूम -धाम से कर लेता है ।

*गुजरात के गाँवों को देखकर कहा जा सकता है कि यहाँ पर उद्योग लगाने के लिए उद्योगपतियों की होड़ लगी रहती है ; इसका सकारात्मक परिणाम यह है कि लोग शहर की भीड़ - भाड़ से तथा प्रदूषण से मुक्ति पाने के लिए गाँवों की ओर उन्मुख हो रहे हैं। सरकारी आवासीय योजना में जो सरकार की तरफ छूट मिलती है, उसे ये बिल्डर देते हैं , जिससे अधिक से अधिक बाहर से लोग आते हैं और जब बाहर से लोग आते हैं तो अपने साथ अर्थ की व्यापक व्यवस्था लाते हैं। यही कारण है कि यहाँ के गाँव अपने आप में सुदृढ़ हैं। किसान को किसानी करने में सहजता होती है। इसे अन्य प्रदेशों को भी अपनाना चाहिए। सखी मण्डल के साथ बड़ी कम्पनियाँ गठबँधन कर लेती हैं जिससे उनकी योजना गाँवों के अन्तिम पायदान तक सहजता से पहुँच जाती है; उदाहरणार्थ बेस्ट स्टार्टप का पुरस्कार प्राप्त कर चुके आईटी कम्पनी कुबेर जी के डिजिटल इण्डिया और ग्रामीण बहनों को सशक्त बनाने के लिए उनके भारत ब्रान्ड को देखा जा सकता है ।

*कृषि तथा उद्योग के साथ ऐतिहासिक स्थलों का विकास करके पर्यटन को गुजरात में बढ़ावा दिया जाता है।

बारडोली सत्याग्रह की स्मृतियों को संचित करने के लिए तथा सरदार वल्लभ भाई पटेल के कार्यों को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए स्वराज्य आश्रम द्वारा संग्रहालय चलाया जाता है । इसके साथ ही गाँधी जी के चरखा और उनके खादी - ग्रामोद्योग को बढ़ावा देने हेतु खादी ग्रामोद्योग भवन भी बनाया गया है। यहाँ पर जितने पर्यटक आते हैं खरीदारी अवश्य ही करते हैं ।

ऐसा करके न सिर्फ स्थानीय लोगों के लिए रोजगार की व्यवस्था की जाती है, अपितु विदेशी मुद्राओं को गाँवों के माध्यम से राष्ट्र की झोली में डालने की ओर एक कदम बढ़ाते हैं।

यही कारण हैं कि गुजरात के गाँवों में लगभग चौदह - पन्द्रह विश्वस्तरीय बैंक व एटीएम का प्रबंध किया गया है।

*मातृ - भूमि के प्रति समर्पण का भाव प्रत्येक नागरिक के मन में होना चाहिए। जिस प्रकार गुजरात के प्रवासी भारतीयों में होता है, उसी प्रकार अन्य लोगों को सीखना चाहिए। ये लोग जहाँ भी रहते हैं वहाँ से ही अपनी मातृ - भूमि के विकास के लिए तन, मन और धन से जुटे ही रहते हैं। इसके विकास के लिए कार्य करते हैं और अन्य बन्धुओं को गर्व का भाव देने के साथ रोजगार भी देते हैं।

जब पहली बार मोदी जी प्रधान मंत्री बने थे तभी उन्होंने इन बातों की चर्चा की थी। वे अपने गाँव का जन्म दिन मनाने , बच्चे पैदा होने पर पौधा लगाने , अपने जन्मदिन पर पैतृक व कुल देवी के स्थलों पर पूजा - अर्चना करने के लिए प्रोत्साहित किये

थे। ऐसा ही यहाँ के लोग भी करते हैं। बाबेन का प्राकट्य दिवस बारह जून को बनाया जाता है। उस दिन पूरे बाबेन को सजाया जाता है। पंचायत तथा अन्य महानुभावों की ओर से कार्यक्रम आयोजित किया जाता है और प्रसाद वितरण भी किया जाता है। अतः केन्द्र व प्रदेश की सरकार के ऊपर पूर्ण रूप से निर्भर न होकर अपनी आवश्यकतानुसार चीजों की आपूर्ति करना, यहाँ के लोगों से सीखनी चाहिए।

निष्कर्षत:

कहा जा सकता है कि गुजरात के इन हाईटेक गाँवों का दिग्दर्शन प्रत्येक जागरुक नागरिकों को करना चाहिए। कहा जाता है कि विद्या बाँटने से बढ़ती है , लेकिन आज यह भी कहा जा सकता है कि यदि लक्ष्मी को बढ़ाना है तो उन्हें तिजोरी और एफ. डी. से निकालकर जन कल्याण हेतु 'रियल एस्टेट' में लगाना चाहिए। शहरों का विकास करके नागरी व्यवस्था स्थापित तो हो चुकी है ; 'मल्टीकॉम्प्लैक्स थियेटर ', 'शापिंग मॉल' में लोगों को जितना आना था , आ चुके। अब कोरोना काल से लोगों को कुछ नया और अनोखा चाहिए , इसलिए भी और विकास करने के लिए तथा धन को बाजार में लगाने हेतु गॉवों की ओर उन्मुख होना ही होगा। इस प्रकार एक पंथ दो काज हो जाएगा - एक - गाँवों से पलायन रुकेगा और दूसरा - प्रकृति की गोद में हमारे बालक - बालिकाओं को अठ्खेलियाँ करने का सौभाग्य प्राप्त होगा। इस प्रकार गाँवों का विकास करके बहुत ही सहजता से हम पुनः प्राचीन प्रारुप को अपना लेगें और अपने राष्ट्र को सोने की चिड़िया के रुप में उन्नतशील बनाने की ओर एक कदम बढ़ा लेगें।

अस्तु।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1गोस्वामी तुलसी दास , रामचरित मानस गीता प्रेस गोरखपुर संस्करण - 2000।

2 गोस्वामी तुलसी दास , कवितावली, गीता प्रेस गोरखपुर संस्करण- 1995।

3 देशाई ईश्वरलाल इच्छाराम , सूरत सोनानी मूरत श्रीमहावीर प्रिन्टर्स सूरत।

4 त्रिपाठी रामनरेश,घाघ और भड्डरी,प्रकाशन हिन्दुस्तानी एकेडमी,सं०1931।

5 बाबेन पंचायत भवन बारडोली सूरत गुजरात।

6 मांडवी लेखाधिकारी अल्पा जी बारडोली सूरत गुजरात।

7 डॉ. ज्योति सिंह गुजरात :आदर्श ग्रामीण व्यवस्था सम्पादक-सहस्त्रबुद्धे रामकृष्ण, साहित्य के शिलालेख , युगधारा फाण्डेशन एवं प्रकाशन लखनऊ प्रथम संस्करण 2022 पृ.सं. -75